CLASS : 12th (Sr.Secondary) **3667/3617**

Series : SS-M/2018

Total No. of Printed Pages : **32**

MARKING INSTRUCTIONS AND MODEL ANSWERS

SOCIOLOGY

ACADEMIC/OPEN

(Only for Fresh/Re-appear Candidates)

उप-परीक्षक मूल्यांकन निर्देशों का ध्यानपूर्वक अवलोकन करके उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें। यदि परीक्षार्थी ने प्रश्न पूर्ण व सही हल किया है तो उसके पूर्ण अंक दें।

General Instructions :

(i) Examiners are advised to go through the general as well as specific instructions before taking up evaluation of the answer-books.

(ii) Instructions given in the marking scheme are to be followed strictly so that there may be uniformity in evaluation.

(iii) Mistakes in the answers are to be underlined or encircled.

(iv) Examiners need not hesitate in awarding full marks to the examinee if the answer/s is/are absolutely correct.

(v) Examiners are requested to ensure that every answer is seriously and honestly gone through before it is awarded mark/s. It will ensure the authenticity as their evaluation and enhance the reputation of the Institution.

(vi) A question having parts is to be evaluated and awarded partwise.

(vii) If an examinee writes an acceptable answer which is not given in the marking scheme, he or she may be awarded marks only after consultation with the head-examiner.

(viii) If an examinee attempts an extra question, that answer deserving higher award should be retained and the other scored out.

(ix) Word limit wherever prescribed, if violated up to 10%. On both sides, may be ignored. If the violation exceeds 10%, 1 mark may be deducted.

(x) Head-examiners will approve the standard of marking of the examiners under them only after ensuring the non-violation of the instructions given in the marking scheme.

(xi) Head-examiners and examiners are once again requested and advised to ensure the authenticity of their evaluation by going through the answers seriously, sincerely and honestly. The advice, if not headed to, will bring a bad name to them and the Institution.

महत्त्वपूर्ण निर्देश :

(i) अंक-योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है। अंक-योजना में दिए गए उत्तर-बिन्दु अंतिम नहीं हैं। ये सुझावात्मक एवं सांकेतिक हैं। यदि परीक्षार्थी ने इनसे भिन्न, किन्तु उपयुक्त उत्तर दिए हैं, तो उसे उपयुक्त अंक दिए जाएँ।

(ii) शुद्ध, सार्थक एवं सटीक उत्तरों को यथायोग्य अधिमान दिए जाएँ।

(iii) परीक्षार्थी द्वारा अपेक्षा के अनुरूप सही उत्तर लिखने पर उसे पूर्णांक दिए जाएँ।

(iv) वर्तनीगत अशुद्धियों एवं विषयांतर की स्थिति में अधिक अंक देकर प्रोत्साहित न करें।

(v) भाषा-क्षमता एवं अभिव्यक्ति-कौशल पर ध्यान दिया जाए।

(vi) मुख्य-परीक्षकों/उप-परीक्षकों को उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करने के लिए केवल Marking Instructions/ Guidelines दी जा रही है यदि मूल्यांकन निर्देश में किसी प्रकार की त्रुटि हो, प्रश्न का उत्तर स्पष्ट न हो, मूल्यांकन निर्देश में दिए गए उत्तर से अलग कोई और भी उत्तर सही हो तो परीक्षक, मुख्य-परीक्षक से विचार-विमर्श करके उस प्रश्न का मूल्यांकन अपने विवेक अनुसार करें।

SET – A

---

1. (i) आर्थिक आयाम, इलेक्ट्रॉनिक अर्थव्यवस्था।

(ii) विश्व व्यापार संगठन (W. T. O.)

(iii) 1990 के दशक से।

(iv) सूचना प्रौद्योगिकी की क्रान्ति के कारण

(v) हाँ

(vi) गलत, एक स्मारक है।

(vii) अनुचित

(viii) सही

(ix) 0.4%

(x) सभी को

(xi) सी राइट मिल्स का

(xii) 6 वर्ष का

(xiii) सभी

(xiv) अस्पृश्यता के

(xv) 1882 में

(xvi) 19वीं $1 \times 16 = 16$

2. ***नगरीकरण :*** कस्बों और शहरों का विकास नगरीकरण है। 2

3. ***साक्षात्कार :*** सामाजिक शोध की एक वह पद्धति है जिसके द्वारा साक्षात्कारकर्ता वार्तालाप के द्वारा सूचनादाता के विचारों और भावानाओं में प्रवेश करके तथ्यों का संकलन करता है। 2

4. ***राज्य :*** एक इस प्रकार की समिति है कि यह कानून व शासन अधिकार द्वारा कार्य करती है और इसे एक निश्चित क्षेत्र के अन्तर्गत सामाजिक व्यवस्था बनाये रखने के लिए सर्वोच्च अधिकार प्राप्त होते हैं। 2

5. ***कृत्रिम अवरोध :*** जनसंख्या वृद्धि को नियन्त्रित करने के कृत्रिम साधन हैं जैसे बड़ी उमर में विवाह करके, यौन संयम रखकर, ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए सीमित संख्या में बच्चे पैदा करना। 2

6. ***श्रमशक्ति :*** श्रम करने की क्षमता; मानव प्राणियों की मानसिक तथा शारीरिक क्षमताएँ जो उत्पादन की प्रक्रिया में काम आती है। 2

7. ***कार्यशील वर्ग :*** जनसंख्या का वह भाग है जो श्रम के द्वारा अपना व अपने परिवार का भरण-पोषण व अन्य आवश्यकतायें पूरी करता है। इसमें आमतौर पर 15 से 64 वर्ष की आयु के लोग होते है। 2

8. ***जनसंचार के साधन :*** समाचार-पत्र, टेलीविजन, फिल्में, इंटरनेट, इत्यादि शामिल हैं। 2

9. ***उपनिवेशवादी शासन :*** ने भारतीय मजदूरों को तथा दक्ष सेवा कर्मियों को जहाजों के माध्यम से सुदूर एशिया, अफ्रीका और अमेरिका में स्थित अन्य उपनिवेशों में भी भेजा। 2

10. ***भीमराव रामजी अम्बेडकर :*** बौद्ध धर्म के पुनः प्रवर्तक, विधिर्वता, विद्वान एवम् राजनीतिज्ञ और भारतीय संविधान के प्रमुख शिल्पकार हैं। इनका जन्म एक गरीब अस्पृश्य समुदाय में हुआ था। 2

11. ***शोधकार्य के लिए :*** सर्वेक्षण, प्रेक्षण, साक्षात्कार आदि पद्धतियों को अपनाया जाता है। 2

12. ***दबाव समूह :*** सार्वजनिक नीति को प्रभावित करने के उद्देश्यों से निर्मित निजी गुट होते हैं। ये समूह विधि निर्माण तथा प्रशासनिक कार्यों को प्रभावित करने की चेष्टा करते हैं। 2

13. ***पंचायत के :***

(i) भूमि विकास, भूमि सुधार का कार्यान्वयन, चकबन्दी और भूमि संरक्षण। 2

(ii) मत्स्य उद्योग। 1 + 1 = 2

14. ***सामाजिक बहिष्कार :*** वह तौर-तरीके हैं जिनके जरिए किसी समूह को समाज में पूरी तरह घुलने मिलने से रोका जाता है। यह उन सभी कारकों पर ध्यान दिलाता है जो किसी समूह को उन अवसरों से वंचित करते हैं जो अधिकांश जनसंख्या के लिए खुले होते हैं। भरपूर तथा क्रियाशील जीवन जीने के लिए, व्यक्ति को जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं के अलावा अन्य आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं की भी जरूरत होती है। सामाजिक भेदभाव अनायास रूप से नहीं बल्कि व्यवस्थित तरीके से होता है। यह समाज की संरचनात्मक विशेषताओं का परिणाम है। 4

15. ***ग्राम सभा :*** पंचायती राज संस्था की त्रिस्तरीय संरचना के आधार पर लोकतन्त्र की इकाई के रूप में ग्राम-सभा स्थित होती है। इसमें पूरे गाँव के सभी लोग शामिल होते हैं। यह आमसभा स्थानीय सरकार का चुनाव करती है और कुछ निश्चित उत्तरदायित्व उसे सौंपती है। ग्राम-सभा परिचर्चा और ग्रामीण स्तर के विकासात्मक कार्यों के लिए एक मंच उपलब्ध कराती है और निर्णय लेने की प्रक्रिया में निर्बलों की भागीदारी के लिए एक महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है। 4

16. ***जनसांख्यिकीय लाभांश :*** जनसंख्या में काम न करने वाले पराश्रित लोगों की तुलना में कार्यशील लोगों के अनुपात में वृद्धि के

फलस्वरूप प्राप्त होता है। आयु की दृष्टि से कार्यशील जनसंख्या मोटे तौर पर 15 से 64 वर्ष तक की आयु होती है। यह वर्ग अपना भरण-पोषण तो करता ही है साथ ही बच्चों व वृद्धों को भी सहारा देना होता है। जनसांख्यिकीय संक्रमण आयु संरचना में होने वाले परिवर्तन जैसे अर्जक आयु वर्ग और अनर्जक आयु वर्ग के बीच अनुपात को कम कर देते हैं जिससे संवृद्धि होने की सम्भावना उत्पन्न हो जाती है। 4

17. ***आधुनिक सामाजिक संगठन :*** उपनिवेशवाद ने हमारे जीवन पर दूरगामी प्रभाव डाले। 19वीं सदी के सुधार आन्दोलन उन चुनौतियों के जवाब थे जिन्हें औपनिवेशिक भारत महसूस कर रहा था। उन्नीसवीं सदी में हुए समाज सुधारक आधुनिक संदर्भ एवम् मिश्रित विचारों से सम्बन्ध थे। इस दौरान जो आधुनिक सामाजिक संगठन अस्तित्व में आये उन्होंने समाज सुधार के लिए कुछ प्रमुखता से कार्य किये। जैसे बंगाल में ब्रह्म समाज और पंजाब में आर्यसमाज की स्थापना हुई। सन् 1914 में मुस्लिम महिलाओं की राष्ट्रस्तरीय संस्था अंजुमन-ए-ख्वातीन-ए-इस्लाम की स्थापना हुई। इन सामाजिक संगठनों ने समाज सुधारकों के माध्यम से सभाओं व गोष्ठियों के अलावा जनसंचार के माध्यमों से भी सामाजिक विषयों पर वाद-विवाद जारी रखा। 4

18. ***स्वतन्त्रता के बाद कृषिकीय :*** सुधारों के लिए नीति सलाहकारों ने नियोजित विकास के कार्यक्रमों की तरफ अपना ध्यान केन्द्रित किया। नीति निर्माताओं ने उस समय भारत की निराशाजनक कृषि स्थिति पर अपने जवाबी मुद्दे बताये। इसमें शामिल किये गये मुद्दे थे। पैदावार का कम होना, आयातित अनाज पर निर्भरता, और ग्रामीण जनसंख्या के एक बड़े भाग में गहन गरीबी का होना। इसके लिए भूस्वामित्व एवम् भूमि के बँटवारे की व्यवस्था में सुधार करने पर बल दिया गया। सन् 1950 और 1970 के बीच भूमि सुधार कानूनों की एक शृंखला को शुरू किया गया। इसे राष्ट्रीय स्तर के साथ राज्य के स्तर पर भी किया गया। इसका इरादा इन परिवर्तनों को लाने का था। 4

19. ***औद्योगीकरण से :*** औद्योगीकरण को सकारात्मक व नकारात्मक दोनों ही रूपों में देखा गया है। 20वीं शताब्दी के मध्य से औद्योगीकरण अपरिहार्य एवम् सकारात्मक रूप में ही दिखाई दे रहा है। इसी के फलस्वरुप कुछ एक स्थानों पर जबरदस्त समानता आई है जैसे रेलगाड़ियों, बसों और साइबर कैफे में जातीय भेदभाव के महत्त्व का न होना। समान कार्य के लिए समान वेतन की वकालत करना जैसे समानतायें देखने को मिलती हैं। हाँलाकि काफी कुछ सामाजिक असमानतायें कम हो रही हैं। लेकिन आर्थिक

असमानतायें उत्पन्न हो रही हैं। क्योंकि अच्छे वेतन वाले व्यवसायों में आज भी उच्च जाति के लोगों का वर्चस्व बना हुआ है। 4

विशेष कथन :

1. उपरोक्त Model Answers केवल संकेत मात्र है। परीक्षार्थी इनके अतिरिक्त भी सही उत्तर लिख सकता है। परीक्षार्थी का हित सर्वोपरि है।

2. प्रश्न संख्या **20** व **21** आठ-आठ अंकों के हैं जिनका मूल्यांकन उप-परीक्षक स्वविवेक से अथवा मुख्य परीक्षक की सहायता से करेंगे।

SET – B

---

1. (i) छः रेडियो स्टेशन थे

(ii) 1876 में शुरू हुआ था

(iii) 1905 में

(iv) साक्षात्कार पद्धति में कम और सर्वेक्षण पद्धति में अधिक लोगों को शामिल किया जाता है

(v) सही

(vi) सही

(vii) सही

(viii) सही

(ix) थॉमस राबर्ट माल्थस

(x) (i) व (ii) दोनों

(xi) एडम स्मिथ

(xii) सभी को

(xiii) 3000 साल

(xiv) साक्षात्कार

(xv) ब्रिटेन में

(xvi) (ii) व (iii) दोनों $1 \times 16 = 16$

2. ***प्रेक्षण :*** में कोई शोधकर्ता किसी एक समूह अथवा समुदाय का निरीक्षण प्रत्यक्ष भागीदारी द्वारा करके सूचनाएँ एकत्र करता हैं तो उसका यह कार्य प्रेक्षण कहलाता है। 2

3. ***सांस्कृतिक विविधता :*** से हमारा तात्पर्य है कि यहाँ अनेक प्रकार के सामाजिक समूह एवम् समुदाय निवास करते हैं। यह समुदाय सांस्कृतिक चिह्नों जैसे भाषा, धर्म, पंथ तथा जाति। प्रजाति द्वारा परिभाषित किये जाते हैं। 2

4. ***प्रातिनिधिक लोकतन्त्र :*** में नागरिक अपने वोट की ताकत से चुनावों के द्वारा जनप्रतिनिधि चुनते हैं। आजकल हर जगह प्रातिनिधिक लोकतन्त्र ही पाया जाता है। 2

5. ***सामाजिक अपवर्जन :*** Set-**A** के प्रश्न संख्या **14** की सहायता देखें।

6. ***भूमंडलीकरण :***

(i) परम्परागत ज्ञान पर हमला। 2

(ii) स्वदेशी उद्योग धन्धे, साहित्यिक परम्पराएँ तथा ज्ञान व्यवस्थाएँ समाप्ति के कगार पर। 2

7. ***पराश्रित वर्ग :*** समस्त जनसंख्या में विभिन्न प्रकार के आश्रितों का सम्मिश्रण होता है। जिसमें बच्चे व अति वृद्ध लोग शामिल होते हैं। जो कार्य नहीं करते हैं। 2

8. ***प्राकृतिक निरोध :*** माल्थस द्वारा इस शब्द का प्रयोग जनसंख्या वृद्धि की दर पर लगने वाली ऐसी रोकथाम के सम्बन्ध में किया गया है जो प्रकृति द्वारा, मानव इच्छाओं की परवाह न करते हुए, लगाई जाती है। ऐसे निरोधों में अकाल, महामारियों और अन्य प्राकृतिक आपदायें शामिल हैं। 2

9. ***अतिरिक्त मूल्य :*** पूँजीवाद के अन्तर्गत, अतिरिक्त मूल्य वह धनराशि है जो अधिशेष श्रम से प्राप्त किया जाता है। और श्रमिकों को मजदूरी चुकाने के बाद बच जाता है। 2

10. ***विशेष उपभोग की :*** वस्तुओं में खाद्य परिसाधक, ग्राइंडर ओवन टोस्टर कपड़े धोने की मशीन आदि को शामिल किया जा सकता है। 2

11. ***पत्नी-स्थानिक परिवार :*** जब कोई नवविवाहित जोड़ा वधु के माता पिता के साथ रहता तो वह पत्नी-स्थानिक परिवार कहलाता है। 2

12. ***कृषि मजदूरों का महिलाकरण :*** कुछ निर्धन क्षेत्रों में जहाँ परिवार के सदस्य काम के लिए अधिकांश समय बाहर व्यतीत करते हैं,

वहाँ कृषि मूलरूप से महिलाओं का कार्य बन गया है। महिलाएँ भी कृषि मजदूरों के मुख्य स्रोत के रूप में उभर रही हैं, जिससे कृषि मजदूरों का महिलाकरण हो रहा है। 2

13. ***स्त्रियों की समानता :*** कराँची अधिवेशन में स्त्रियों को समानता का अधिकार देने के लिए यह प्रतिबद्धता दोहराई गई कि : 2
स्त्रियों को मत डालने, प्रतिनिधित्व करने और सार्वजनिक पद धारण करने का अधिकार होगा।

14. ***माल्थस का जनसंख्या वृद्धि :*** का सिद्धान्त जनसांख्यिकी के सर्वाधिक प्रसिद्ध सिद्धान्तों में से एक है जो उनके जनसंख्या विषयक निबंध "Essay on Population" में स्पष्ट किया गया है। यह एक तरह का निराशावादी सिद्धान्त था। माल्थस का कहना था कि मनुष्यों की जनसंख्या उस दर की तुलना में अधिक तेजी से बढ़ती है, जिस दर पर मनुष्य के भरण-पोषण के साधन बढ़ सकते हैं। इसलिए मनुष्य सदा ही गरीबी की हालत में जीने के लिए दण्डित किया जाता है। उनके अनुसार जनसंख्या का विस्तार ज्यामितीय या गुणोत्तर रूप से होता है और कृषि उत्पादन में वृद्धि गणितीय या समांतर रूप से होती है। लोगों में समृद्धि लाने के लिए उन्होंने जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने पर बल दिया। 4

15. ***जनजातीय क्षेत्रों में :*** साप्ताहिक बाजार एक पुरानी संस्था है। साप्ताहिक बाजार एक सामाजिक संस्था के रूप में, जनजातीय अर्थव्यवस्था तथा जनजातीय संस्कृति के युवा पीढ़ी को हस्तांतरित करने का कार्य करती है। वहीं समय के साथ इनके स्वरूप में परिवर्तन भी हुआ है। इन दूरस्थ क्षेत्रों के उपनिवेशिक राज्यों के नियंत्रण में आने के बाद इन्हें धीरे-धीरे क्षेत्रीय एवम् राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं से जोड़ दिया गया। जनजातीय क्षेत्रों को सड़कों के निर्माण द्वारा और स्थानीय लोगों को समझा-बुझाकर (जिसमें से बहुत से लोगों ने जनजातीय विद्रोहों द्वारा उपनिवेशिक शासन का विरोध किया था) 'खोला गया' ताकि इन इलाकों के समृद्ध जंगलों और खनिजों तक बेरोक-टोक पहुँचा जा सके। ऐसा होने से इन क्षेत्रों में व्यापारी, साहूकार और आसपास के मैदानी इलाकों से अन्य गैर जनजातीय लोगों का भी तांता लग गया। इस प्रकार जनजातीय अर्थव्यवस्था में तो बदलाव आया ही इसके साथ ही जनजातीय श्रम के एक 'बाजार' का भी विकास हुआ। 4

16. ***विघटनकारी ताकतें :*** आज हर आदमी समाचारपत्रों व टेलीविजन से जानकारी चौबीसों घण्टे लेता है। और शायद सभी के मन में यह अवसादकारी भावना उत्पन्न होती होगी कि हमारे देश का मानो कोई भविष्य ही न हो। कारण स्पष्ट है कि कुछ विघटनकारी ताकतें

जैसे साम्प्रदायिक दंगे, क्षेत्रीय स्वायत्तता की माँगे, जातिगत लड़ाई-झगड़े आदि अपना काम करते हुए हमारे देश की एकता एवम् अखण्डता को तार-तार करने पर तुली हुई हैं। इसका कारण यह है कि हमारी जनसंख्या के बड़े हिस्से में देशभक्ति की भावना का अभाव है वे अपने देश के बारे में अधिक गहराई से नहीं सोचते। इन विघटनकारी ताकतों से बचाव के लिए हम सभी को एकता व सकारात्मक सोच का परिचय देना होगा। 4

17. ***स्वतन्त्रता के पश्चात् :*** भी सरकार ने आर्थिकी को 'प्रभावशाली ऊँचाइयों' पर रखा। स्वतन्त्रता उपरान्त कुछ नये शहर जैसे बड़ोदरा, कोयम्बटूर, बैंगलोर, पूना, फरीदाबाद आदि महत्त्वपूर्ण औद्योगिक क्षेत्र बन गये। इसके साथ ही सरकार ने अन्य छोटे पैमाने के उद्योगों को भी विशिष्ट प्रोत्साहन एवम् सहायता देकर प्रोत्साहित करने का प्रयास जारी रखा। बहुत सी वस्तुएँ जैसे कागज एवं लकड़ी के सामान, लेखन-सामग्री, शीशा एवम् चीनी मिट्टी जैसे छोटे पैमाने के क्षेत्रों के लिए आरक्षित थे। इतना ही नहीं 72% लोग भी छोटे पैमाने के एवम् परम्परागत उद्योगों में कार्यरत थे। 4

18. ***चिपको आन्दोलन :*** पर्यावरणीय आन्दोलन का एक सशक्त उदाहरण है, रामचन्द्र गुहा ने अपनी कृति 'अशान्त वन' में इसका उल्लेख

अच्छे ढंग से किया है। जिसमें सभी के मिश्रित हित और विचारधाराएँ समाहित की गई हैं।

अर्थव्यवस्था पारिस्थितिकीय तथा राजनीतिक प्रतिनिधित्व की चिन्ताएँ चिपको आन्दोलन के आधार रूप में देखी गई। इसमें उल्लेख है कि किस प्रकार सरकारी जंगल के ठेकेदारों द्वारा वनों के काटने को रोकने के लिए महिलाएँ पेड़ों से चिपक जाती हैं। इस विरोध का कारण एक तो गाँववासियों के जीवन निर्वहन का प्रश्न दूसरा इसका पर्यावरणीय विनाश के रूप में देखा जाना था। जबकि सरकार की मन्शा इसके विपरीत राजस्व कमाने की थी। 4

19. ***स्वतः स्फूर्त महिला आन्दोलन :*** सत्तर के दशक में ही स्वतः स्फूर्त महिला आन्दोलनों का उदय देखा गया। इस दशक के मध्य में, कई शिक्षित महिलाओं ने सक्रिय राजनीति में प्रवेश किया। इसके अतिरिक्त महिलाओं के मुद्दों को भी उठाया गया। कई नगरों में महिलाओं के समूह एक साथ आये। जिन घटनाओं ने इन सभाओं को संगठनात्मक प्रयासों के रूप में मूर्तिमान करने में उत्प्रेरक का कार्य किया; वे थे मथुरा बलात्कार कांड (1978) तथा माया त्यागी बलात्कार कांड (1980)। दोनों ही पुलिस संरक्षण में बलात्कार के मामले थे जिनसे राष्ट्रव्यापी विरोध आन्दोलन हुए। 4

SET – C

1. (i) गाँधीजी

(ii) साक्षात्कार पद्धति में

(iii) साक्षात्कार पद्धति

(iv) सर्वेक्षण पद्धति

(v) गलत। तमिलनाडु में मनाया जाता है

(vi) असत्य उच्च जाति समूह के लोग होते हैं

(vii) सही

(viii) गलत। ब्रिटिश शासन की ही देन है

(ix) सभी M. N. Srinivas की ही देन है

(x) 85%

(xi) अस्पृश्यता

(xii) सामाजिक

(xiii) उपरोक्त सभी

(xiv) (ii) व (iii) दोनों हैं

(xv) इनमें से कोई नहीं

(xvi) उपरोक्त सभी $1 \times 16 = 16$

2. ***किसान :*** उन्हें कहा जाता है जो कि वस्तुओं के उत्पादन और खरीद दोनों रूपों में बाजार से जुड़े होते हैं। 2

3. ***विभेदीकरण :*** हरित क्रान्ति की अन्तिम परिणति थी। यह एक ऐसी प्रक्रिया रही जिसमें धनी अधिक धनी हो गये और निर्धन और गरीब हो गये। 2

4. ***औद्योगीकरण :*** एक वह प्रक्रिया है जिसमें वस्तुओं का उत्पादन विद्युत व स्टीम द्वारा संचालित मशीनों द्वारा किया जाता है। 2

5. ***साम्प्रदायिकता :*** अपने आप में एक ऐसी अभिवृत्ति है जो अपने समूह को ही श्रेष्ठ समझती है और अन्य समूहों को अपना विरोधी मानती है। 2

6. ***राष्ट्र :*** एक ऐसा समुदाय जो अपने आपको एक समुदाय मानता है और अनेक साझा – विशिष्टताओं जैसे : साझी-भाषा, भौगोलिक स्थिति, इतिहास, धर्म, जाति, संजाति, राजनीतिक, आकांक्षाओं आदि पर आधारित होता है। 2

7. ***अन्तर्विवाह :*** इस प्रथा के अन्तर्गत व्यक्ति अपने सांस्कृतिक समूह, जिसका वह पहले से ही सदस्य है, उदाहरण के लिए जाति के भीतर ही विवाह करता है। 2

8. ***आत्मसात्करण की नीतियाँ :*** जिनके अन्तर्गत अक्सर नृजातीय, धार्मिक या भाषाई समूहों की पहचानों को एकदम दबा दिया जाता है, समूहों के बीच पाई जाने वाली सांस्कृतिक विभिन्नताओं को मिटाने की कोशिश करती हैं। 2

9. ***सर्वेक्षण :*** इस प्रणाली का सबसे बड़ा लाभ यह है कि इसके अन्तर्गत एक साथ काफी बड़ी संख्या में लोगों के विचार जाने जा सकते हैं। 2

10. ***साक्षात्कार :*** इस पद्धति में लचीलापन होता है। सम्बन्धित विषय पर विस्तार से चर्चा की जा सकती है। प्रश्नों को संशोधित किया जा सकता है। 2

11. ***औद्योगिक शहर :*** बोकारो, भिलाई, राउरकेला, दुर्गापुर तथा अन्य और भी सकते हैं। $\frac{1}{2}+\frac{1}{2}+\frac{1}{2}+\frac{1}{2}=2$

12. ***जाति की विशेषताएँ :***

(i) जाति समूह सजातीय होते हैं,

(ii) पारम्परिक तौर पर जातियाँ व्यवसाय से जुड़ी होती हैं,

(iii) जातियों में आपसी उपविभाजन होता है। 2

13. ***क्रान्तिकारी सामाजिक आन्दोलन :*** ये आन्दोलन प्रायः राजसत्ता के द्वारा सामाजिक सम्बन्धों के आमूल रूपांतरण का प्रयास करते हैं। उदाहरण के तौर पर रूस की बोतशेविक क्रान्ति, नक्सली आन्दोलन। 2

14. ***जनजातीय समाज के :*** जहाँ तक जनजातियों की सकारात्मक विशिष्टताओं का सम्बन्ध है, उसके अनुसार जनजातियों को उनके स्थायी और अर्जित विशेषकों में बांटा गया है। फिर अर्जित विशेषकों पर आधारित वर्गीकरण दो मुख्य कसौटियों, आजीविका के साधन और हिन्दू समाज में उनके समावेश की सीमा अथवा दोनों के सम्मिश्रण पर आधारित है।

आजीविका के आधार पर जनजातियों को मछुआ, खाद्य संग्राहक और आखेटक झूम खेती करने वाले, कृषक और बागान तथा कामगारों की श्रेणियों में बांटा जा सकता है। लेकिन अकादमिक समाजशास्त्र और राजनीति तथा सार्वजनिक मामलों में अपनाएँ जाने वाले सबसे प्रभावी वर्गीकरण इस बात पर आधारित हैं कि हिन्दू समाज में अमुक जनजाति को कहाँ तक आत्मसात किया गया है। 4

15. ***समाज, धर्म और स्त्रियों की :*** परिस्थिति में सुधार करने के लिये राजा राममोहन राय द्वारा किये गये प्रयत्नों को बंगाल में उन्नीसवीं सदी के सामाजिक सुधारों को प्रारम्भिक बिन्दु कहा जा सकता है। 1828 में ब्रह्म समाज से एक दशक पहले राय ने सती प्रथा के विरुद्ध अभियान चलाया। राम मोहन ने इस प्रकार सती की प्रथा का विरोध मानवतावादी तथा नैसर्गिक अधिकारों के सिद्धान्तों एवम् हिन्दूशास्त्रों के आधार पर किया। इसके अतिरिक्त हिन्दुओं की ऊँची जातियों में विधवाओं के साथ उस समय किया जा रहा निंदनीय एवं अन्यायपूर्ण व्यवहार एक प्रमुख मुद्दा था जिसे सामाजिक सुधारकों ने उठाया। 4

16. ***आधुनिकता :*** का अर्थ हम इस रूप में समझ पाते हैं कि इस समक्ष सीमित संकीर्ण स्थानीय दृष्टिकोण कमजोर पड़ जाते हैं और सार्वभौमिक प्रतिबद्धता और विश्व जनीन दृष्टिकोण ज्यादा प्रभावशाली होता है। इसमें उपयोगिता, गणना और विज्ञान की सत्यता को भावुकता, धार्मिक पवित्रता और अवैज्ञानिक तत्वों के स्थान पर महत्त्व दिया जाता है। इसके प्रभाव में सामाजिक तथा राजनीतिक स्तर पर व्यक्ति को प्राथमिकता दी जाती है न कि समूह को; इसके मूल्यों के मुताबिक मनुष्य ऐसे संगठन में रहते और काम करते हैं जिसका चयन जन्म के आधार पर नहीं बल्कि इच्छा के आधार पर होता है। 4

17. ***हदबन्दी अधिनियम :*** सन् 1950 से 1970 के बीच में भूमि सुधार कानूनों की एक शृंखला को शुरू किया गया। उसी शृंखला में भूमि सुधार की तीसरी मुख्य शृंखला में भूमि की हदबन्दी अधिनियम थे। इन कानूनों के तहत एक विशिष्ट परिवार के लिए जमीन रखने की एक उच्चतम सीमा तय कर दी गई। यह कार्य राज्यों का था कि वह अतिरिक्त भूमि को स्वयं अधिगृहित करें, और भूमिहीन किसानों को वितरित कर दें। परन्तु अधिकांश राज्यों में यह अधिनियम दंतविहीन साबित हुए। क्योंकि लगभग सभी

घरानों ने अपनी अतिरिक्त भूमि को अपने परिवार के सदस्यों, रिश्तेदारों यहाँ तक की नौकरों तक में बाँट लिया। लेकिन वास्तव में ऐसा था नहीं । 4

18. ***रेडियो के प्रसारण :*** रेडियो आमजन तक सूचनाएँ भेजने व मनोरंजन करने का एक सरल व सस्ता साधन माना जाता है। इसकी शुरूआत 1920 के दशक में कोलकाता और चेन्नई में अपरिपक्व 'हैम' ब्रॉडकास्टिंग क्लबों के जरिए भारत में शुरू हुआ था। 1940 के दशक में द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान एक सार्वजनिक प्रसारण प्रणाली के रूप में उस समय परिपक्व हो गया जब वह दक्षिण-पूर्व एशिया में मित्र राष्ट्रों की सेनाओं के लिए प्रचार का एक बड़ा साधन बना। स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय भारत में केवल 6 रेडियो स्टेशन थे जो बड़े-बड़े शहरों में स्थित थे। 1950 तक समस्त भारत में कुल मिलाकर 5,46,200 रेडियो लाइसेंस थे। आकाशवाणी के कार्यक्रमों में मुख्य रूप से समाचार, सामयिक विषय और विकास पर चर्चाये होती थी। 4

19. ***सापेक्षिक वंचन सिद्धांत :*** सामाजिक आन्दोलनों के सिद्धान्तों में से एक है। इस सिद्धांत के अनुसार, सामाजिक संघर्ष तब उत्पन्न होता है जब एक सामाजिक समूह यह महसूस करता है कि वह अपने

आसपास के अन्य लोगों से खराब स्थिति में हैं। ऐसा संघर्ष सफल सामूहिक विरोध में परिणित हो सकता है यह सिद्धान्त सामाजिक आन्दोलनों को भड़काने में मनोवैज्ञानिक कारकों जैसे क्षोभ तथा रोष की भूमिका पर बल देता है। इस सिद्धान्त की सीमा यह है कि हालाँकि वंचन का आभास सामूहिक गतिविधि के लिए एक आवश्यक दशा है फिर भी यह स्वयं में एक पर्याप्त कारण नहीं है। ऐसी सभी घटनाएँ जहाँ लोग सापेक्षिक वंचन का अनुभव करते हैं, सामाजिक आन्दोलनों में परिणित नहीं होती। 4

SET – D

---

1. (i) विद्यार्थियों का आत्मविकास, मनोवैज्ञानिक सन्तुष्टि आदि

(ii) साक्षात्कार

(iii) सर्वेक्षण पद्धति

(iv) कानून

(v) सही

(vi) हाँ

(vii) सही

(viii) सही

(ix) राष्ट्रवादी

(x) सभी में

(xi) सामाजिक विषमता

(xii) इनमें से कोई नहीं

(xiii) 11% (ग्यारह प्रतिशत)

(xiv) उपरोक्त सभी

(xv) जाति

(xvi) जाति $1 \times 16 = 16$

2. ***जनजाति :*** व्यक्तियों का एक वह समुदाय है जो निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में निवास करता है। किसी आदि पूर्वज से अपना उद्‌गम मानता है, जिसकी एक सामान्य संस्कृति है और जो आज भी आधुनिक सभ्यता के प्रभावों से सापेक्षित रूप से वंचित है। 2

3. ***जनांकिकी :*** 'लोगों का वर्णन' अर्थात जनसंख्या का सुव्यवस्थित अध्ययन ही जनांकिकी है। 2

4. ***अवलोकन पद्धति :*** एक शोधकर्ता की किसी समूह अथवा समुदाय का निरीक्षण कर प्रत्यक्ष भागीदारी द्वारा सूचनाएँ एकत्र करना है। 2

5. ***लोकतन्त्र :*** सभी के लिए राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक न्याय है। 2

6. ***हरित क्रान्ति :*** का अभिप्राय कृषि व्यवस्था में क्रान्तिकारी नीतियों द्वारा सर्वांगीण विकास से होता है और इसका अन्तिम लक्ष्य कृषि फसलों का अधिकतम उत्पादन लेना होता है। 2

7. ***जनसंचार :*** सामान्य जनों तक सूचना पहुँचाने की विस्तृत विधि है। इसके अन्तर्गत समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, टेलीविज़न, फिल्में, रेडियो, फोन, मोबाइल, कम्प्यूटर इन्टरनेट आदि सभी उपकरणों का समावेश होता है। 2

8. ***प्रायोजना कार्य :*** (i) यह एक खर्चीली विधि है। (ii) इसमें क्रमबद्ध अध्ययन का अभाव है। 2

9. ***जनसंख्या संवृद्धि :*** बेहतर स्वास्थ्य सुविधायें, मृत्युदर में कमी, सामान्य प्रगति, आर्थिक विकास। 2

10. ***शारीरिक प्रजातीय :*** दृष्टि से जनजातियों का निगिटो, आस्टैलॉयड, मंगोलॉयड, द्रविड़ और आर्य श्रेणियों में वर्गीकरण किया गया है। 2

11. ***सत्यशोधक समाज :*** में ज्योतिबा फुले ने व्यावहारिक सामाजिक सुधारों, सबसे पहले पारम्परिक ब्राह्मण संस्कृति में सबसे नीचे समझे जाने वाले दो समूहों, स्त्रियों एवं अछूतों को सहायता देने के प्रयत्न किये। 2

12. ***1850 का जाति निर्योग्यता :*** निवारण अधिनियम जिसमें यह व्यवस्था की गई थी कि केवल धर्म या जाति के परिवर्तन के कारण नागरिकों के अधिकारों को कम नहीं किया जाएगा। 2

13. ***विघटनकारी ताकतें :*** साम्प्रदायिक दंगे, क्षेत्रीय स्वायत्तता की माँगे, जातिगत लड़ाई-झगड़े देशभक्ति की भावना का अभाव। 2

14. ***जनसांख्यिकीय संक्रमण :*** का सिद्धान्त जनसांख्यिकीय विषय में एक उल्लेखनीय सिद्धान्त है। इसका तात्पर्य है कि जनसंख्या वृद्धि आर्थिक विकास के समग्र स्तरों से जुड़ी होती है एवम् प्रत्येक समाज विकास से सम्बन्धित जनसंख्या वृद्धि के एक निश्चित रूप का अनुसरण करता है। इस सिद्धान्त के तहत जनसंख्या वृद्धि के तीन बुनियादी चरणों का उल्लेख किया गया है। जनसंख्या का संक्रमणकालीन चरण वह है, जब समाज पिछड़ी अवस्था से उन्नत अवस्था में जाता है और इस अवस्था की विशेषता यह है कि इस दौरान जनसंख्या वृद्धि की दरें काफी ऊँची हो जाती हैं। 4

15. ***राष्ट्र :*** एक अनूठा समुदाय होता है, जिसका वर्णन आसान है। हम ऐसे अनेक विशिष्ट राष्ट्रों का वर्णन कर सकते हैं, जिनकी स्थापना साझे धर्म, भाषा, नृजातीयता इतिहास अथवा क्षेत्रीय संस्कृति जैसी साझी-सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और राजनैतिक संस्थाओं के आधार पर की गई है। लेकिन किसी ऐसे परिभाषिक लक्षणों को निर्धारित

करना अथवा उन विशेषताओं का पता लगाना कठिन है, जो एक राष्ट्र में होनी ही चाहिए। परन्तु ऐसे बहुत से राष्ट्र हैं जिनकी अपनी एक साझा या सामान्य भाषा, धर्म, नृजातीयता आदि नहीं है। दूसरी ओर ऐसी अनेक भाषाएँ धर्म या नृजातियाँ हैं जो कई राष्ट्रों में पाई जाती हैं। लेकिन इससे यह निष्कर्ष नहीं निकलता कि यह सभी मिलकर एक एकीकृत राष्ट्र का निर्माण करते हैं। उदाहरण के लिए सभी अंग्रेजी भाषी लोग या सभी बौद्ध धर्मावलम्बी। 4

16. ***ग्रामीण समुदाय :*** कृषि पर आधारित व्यक्तियों का एक सरल समुदाय है। ग्रामीण समुदाय परस्पर सम्बन्धित तथा असम्बन्धित व्यक्तियों का एक ऐसा समूह है जो परस्पर एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुड़ा होता है। ये अधिक विस्तृत एक बहुत बड़े घर या परस्पर निकट स्थित घरों में कभी नियमित तो कभी अनियमित रूप से रहते हैं। वह मूलतः अनेक कृषि योग्य खेतों में सामान्य तौर पर खेती करता है; मैदानी भूमि को आपस में बाँट लेता है और आसपास पड़ी बेकार भूमि पर अपने पशुओं को चराता है जिसपर निकटवर्ती समुदायों की सीमाओं तक वह अपने अधिकार का दावा करता है। 4

17. ***महिला आन्दोलन :*** 19वीं सदी के समाज सुधार आन्दोलनों में महिलाओं से सम्बन्धित अनेक मुद्दे उठाये गये तथा 20वीं सदी के प्रारम्भ में राष्ट्रीय तथा स्थानीय स्तर पर महिला संगठनों में वृद्धि देखी गई। जिन्होंने महिलाओं से सम्बन्धित समस्याओं को सुलझाने में रूचि दिखाई। इनमें प्रमुख रूप से भारतीय महिला एसोसिएशन, ऑल इण्डिया वूमेन्स कान्फ्रेंस, नेशनल काउंसिल फॉर वूमेन्स इन इण्डिया आदि संगठनों ने महिला कल्याण के लिए कार्य किया। आज महिलायें समाज में उचित स्थान पाने की अधिकारी हैं और हर क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाने को सक्षम हैं। 4

18. ***जनजातीय आन्दोलन :*** देशभर में फैले विभिन्न जनजातीय समूहों के मुद्दे समान हो सकते हैं, लेकिन उनके विभेद भी उतने ही महत्त्वपूर्ण हैं। जनजातीय आन्दोलनों में से कई अधिकांश रूप से मध्य भारत की तथाकथित जनजातीय बेल्ट में स्थित रहे हैं। जैसे छोटा नागपुर, संथाल हो, ओरांव व मुंडा। हम यहाँ जनजातीय आन्दोलनों के विभिन्न रूपों की चर्चा कर सकते हैं। क्योंकि एक ही क्षेत्र में जनजातीय आन्दोलन के विभिन्न रूप विद्यमान हो सकते हैं। उदाहरण के रूप में झारखण्ड आन्दोलन की चर्चा करें। यहाँ जनजातीय आन्दोलन का इतिहास सौ वर्ष पुराना है। 4

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारत सरकार ने राज्यों के निर्माण की जो प्रक्रिया प्रारंभ की, उसने इस क्षेत्र में (पूर्वोत्तर में) अशांति ही पैदा थी। एक मुख्य मुद्दा जो देश के विभिन्न भागों के जनजातीय आन्दोलनों को जोड़ता है, वह है जनजातीय लोगों का वन-भूमि से विस्थापन। 4

19. ***जनजातीय समाज :*** भारत की जनजातीय जनसंख्या व्यापक रूप से बिखरी हुई है। इनके पारिस्थितिक आवासों में पहाड़ियाँ, वन, ग्रामीण मैदान और नगरीय औद्योगिक क्षेत्र शामिल हैं। इनमें से कुछ इलाकों में जनजातीय आबादी घनी है तो कुछ में कम। आइये इस पर एक दृष्टिपात करें तो पायेंगे कि जनजातीय जनसंख्या का 85% भाग ''मध्य भारत'' में रहता है। जनजातीय जनसंख्या का शेष 15% भाग में से 11% से अधिक पूर्वोत्तर राज्यों में बाकी के 3% से थोड़े से अधिक शेष भारत में रहते हैं। यदि हम राज्य की जनसंख्या में जनजातियों के हिस्से पर नजर डाले तो पाएँगें कि पूर्वोत्तर राज्यों में इनकी आबादी घनी है; वहाँ असम को छोड़कर सभी राज्यों में उनका घनत्व 30% से अधिक है। 4